http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2026) वर्ष 6, अंक 10, 46-47

Article ID:673

अंजीर की वैज्ञानिक खेती – कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए लाभकारी फल फसल

सुशील शर्मा, प्रिंस अमन कुमार

उद्यान विभाग, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

*अनुरूपी लेखक

सुशील शर्मा*

परिचय

अंजीर (फाइकस कैरिका) विश्व की प्राचीनतम फल फसलों में से एक है। अपने विशिष्ट स्वाद, पोषण मूल्य और सूखे फल के रूप में लंबे समय तक उपयोग की संभावना के कारण इसका विशेष महत्त्व है। भारत में इसकी व्यावसायिक खेती अभी सीमित क्षेत्र में होती है, जिसमें पश्चिमी महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु प्रमुख हैं। बदलते मौसम, जल संकट और पारंपरिक फसलों में बढ़ती लागत को देखते हुए अंजीर किसानों के लिए फसल विविधीकरण का एक संभावित विकल्प बन सकता है।

विशेषताएँ व उपयोग: अंजीर एक पर्णपाती (पतझड़ वाला) फल वृक्ष है। इसका ताजा फल मीठा और मुलायम होता है तथा इसमें आहार रेशा, पोटैशियम, कैल्शियम और आयरन जैसे तत्व पाए जाते हैं। ताजा फल बहुत जल्दी खराब होता है, इसलिए इसके लिए स्थानीय व निकट के बाजार जरूरी हैं, जबकि सूखे अंजीर को दूर के बाजारों तक भेजा जा सकता है। ताजे और सूखे फल के अलावा इससे जैम, पल्प, पेय, बेकरी व मिठाई के उत्पाद भी बनाए जाते हैं।

जलवायु और मिट्टी: अंजीर को गर्म, धूप वाली और अपेक्षाकृत शुष्क जलवायु पसंद है। ICAR के अनुसार यह 45 डिग्री सेल्सियस तक का तापमान सहन कर सकता है, हालाँकि अधिक गर्मी में पौधे की पानी की आवश्यकता बढ़ जाती है। इसके लिए अच्छे जल निकास वाली, पर्याप्त गहरी और जैविक पदार्थ युक्त मिट्टी उपयुक्त है। भारी और जलभराव वाली भूमि से बचें, क्योंकि जड़ों के पास लंबे समय तक पानी रुकने से जड़ की समस्याएँ बढ़ती हैं।

किसान ध्यान दें: अंजीर सूखा सहने वाली फसल जरूर है, लेकिन व्यावसायिक उत्पादन के लिए नियंत्रित और आवश्यकता आधारित सिंचाई जरूरी है।

किस्में: भारत में पूना फिग, दिनकर, डायना, एक्सेल और कोनाड्रिया जैसी किस्मों की चर्चा मिलती है। राजस्थान के बाड़मेर क्षेत्र में मुख्य रूप से "डायना" किस्म लगाई गई है। एक्सेल का वृक्ष अपेक्षाकृत छोटा रहता है, इसलिए उसे सघन बागवानी के लिए उपयोगी बताया जाता है। हरियाणा के लिए किस्म का चुनाव अपने क्षेत्र की जलवायु, बाजार (ताजा या सूखा फल) और स्थानीय कृषि विश्वविद्यालय/कृषि विभाग की सलाह के आधार पर ही करें।

पौध सामग्री एवं प्रवर्धन: अंजीर का प्रवर्धन सामान्यतः कटिंग से किया जाता है। व्यावसायिक बाग के लिए सही किस्म के, स्वस्थ और रोगमुक्त मातृ पौधों से ली गई सामग्री ही प्रयोग करें। अज्ञात स्रोत से सस्ती पौध लेने से पूरे बाग की उत्पादकता प्रभावित हो सकती है।

रोपण एवं पौध दूरी: रोपण ऐसे समय करें जब अत्यधिक गर्मी या पाला न हो, ताकि पौधे को जड़ें जमाने के लिए अनुकूल मौसम मिले। रोपण से पहले खेत की सफाई कर जल निकास की व्यवस्था कर

लें। पौध दूरी किस्म, मिट्टी, प्रशिक्षण पद्धति और बाग के उद्देश्य पर निर्भर करती है। बिना उचित छंटाई के अत्यधिक सघन रोपण समस्या पैदा कर सकता है। बाड़मेर में डायना किस्म 4 × 4 मीटर की दूरी पर लगाई गई है, परंतु किसी एक दूरी की नकल करने के बजाय अपने क्षेत्र की परिस्थितियों के अनुसार दूरी तय करें।

सिंचाई: अंजीर को बहुत अधिक पानी नहीं चाहिए, परंतु संतुलित नमी उत्पादन के लिए जरूरी है। पौध स्थापना, नई वृद्धि, फल विकास और लंबे सूखे के समय सिंचाई की आवश्यकता बढ़ जाती है। ड्रिप सिंचाई सबसे उपयुक्त है, क्योंकि इससे पानी की बचत होती है, जड़ क्षेत्र में नमी नियंत्रित रहती है और खाद सिंचाई के साथ देना आसान होता है।

खाद एवं उर्वरक: बाग लगाने से पहले मृदा परीक्षण करवाना सबसे अच्छा है। पोषण कार्यक्रम में सड़ी गोबर की खाद/कम्पोस्ट, नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटाश तथा आवश्यकता अनुसार कैल्शियम, मैग्नीशियम और सूक्ष्म पोषक तत्व शामिल किए जा सकते हैं। सभी खेतों के लिए एक ही मात्रा उपयुक्त नहीं होती; पौधे की आयु, मिट्टी की उर्वरता, फल भार और सिंचाई व्यवस्था के अनुसार मात्रा तय करें।

प्रशिक्षण एवं छंटाई: छंटाई का सीधा संबंध उत्पादन और फल गुणवत्ता से है। इसके मुख्य उद्देश्य हैं – पौधे को उचित आकार देना, सूखी व रोगग्रस्त शाखाएँ हटाना, घनी शाखाओं को नियंत्रित करना, नई फलदार शाखाओं को बढ़ावा देना तथा तुड़ाई और पौध संरक्षण को आसान बनाना। उचित छंटाई से धूप व हवा का संचार बेहतर होता है।

तुड़ाई एवं फल गुणवत्ता: अंजीर के फल बहुत नाजुक होते हैं और चोट व संक्रमण से जल्दी खराब हो जाते हैं। इसलिए तुड़ाई में सावधानी रखें:

- फल को जोर से न खींचें और चोट से बचाएँ;
- साफ व मुलायम बर्तनों/क्रेट का प्रयोग करें;
- अत्यधिक पके फल को लंबे समय तक पौधे पर न छोड़ें;
- बाजार की दूरी के अनुसार तुड़ाई की अवस्था तय करें;
- तोड़े गए फल को छाया में रखें और जल्दी बाजार पहुँचाएँ।

सूखे अंजीर का महत्त्व: ताजा फल की जल्दी खराब होने की प्रकृति के कारण अंजीर की बड़ी व्यावसायिक संभावना इसे सुखाने में है। इससे किसान के पास दो रास्ते बनते हैं – ताजा फल (तुड़ाई, छँटाई, पैकिंग, नजदीकी बाजार) और सूखा फल (चयन, सुखाना, ग्रेडिंग, पैकिंग, दूर का बाजार।

कीट एवं रोग प्रबंधन: अंजीर के बाग में समेकित पौध संरक्षण अपनाएँ – स्वस्थ पौध, खेत की स्वच्छता, उचित दूरी, संतुलित सिंचाई, समय पर छंटाई, संक्रमित भाग हटाना और नियमित निगरानी। रसायनों का प्रयोग केवल कृषि विश्वविद्यालय/कृषि विभाग की वर्तमान अनुशंसा और उत्पाद के लेबल के अनुसार करें।

हरियाणा के किसानों के लिए: हरियाणा के कई भागों में गर्म और अपेक्षाकृत शुष्क परिस्थितियाँ हैं, इसलिए अंजीर को चुनिंदा क्षेत्रों में प्रायोगिक रूप से फसल विविधीकरण के विकल्प की तरह देखा जा सकता है। गर्मियों में पौधों की पानी की माँग बढ़ती है, सर्दी में पाले से छोटे पौधों की सुरक्षा जरूरी हो सकती है, भारी व जलभराव वाली भूमि से बचना चाहिए, अच्छी गुणवत्ता का पानी और ड्रिप प्रणाली होना लाभदायक है, तथा ताजे फल के लिए बाजार से कम दूरी रखना महत्त्वपूर्ण है।